पटना जिला के शहरी क्षेत्रों की महिलाओं में राजनीतिक अधिकार के प्रति जागरूकता

चाँदनी कुमारी

शोधछात्रा, गृह विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना।

डॉ० रजिया नसरीन

गृह विज्ञान विभाग, रामेश्वर दास पन्नालाल महिला कॉलेज, पटना सिटी, पटना

शोध सारांश

महिला अधिकार से हमारा तात्पर्य है एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें महिलाओं के लिए अधिकार का सर्वसंपन्न और विकसित होन के लिए सारे संभावनाओं के द्वार तो खुले तथा साथ ही साथ नए विकल्प भी तैयार हो सके। महिलाएँ समाज के लगभग आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती है। आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किए जाते रहे हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला अधिकार के कार्यों में तेजी आई है। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं में आत्म विश्वास में बढ़ोतरी हुई है। एक ओर जहां केंन्द्र व राज्यों की सरकारें महिला उत्थान की नई-नई योजनाएं बनाने में लगी है, वही कई गैर सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिए उनकी आवाज बुलद करने में लगे हैं। महिलाओं में ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है कि वह अपने अंदर छिपी हुई ताकत को सामने लाग कर बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सके। महिलाएँ समाज में कभी बेटी के रूप में, कभी बहन के रूप में, तो कभी माँ के रूप में समाज को विकसित एवं परिमार्जित करने का अथक प्रयास करती रही है।

मुख्य शब्द :- महिला अधिकार, आजादी, परिमार्जित, समानता

प्रस्तावना :

एक सभ्यता के अनुसार किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र में पूरुषों के साथ महिलाएँ भी शिक्षित हो। शिक्षा का अधिकार समान रूप से पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं के लिए भी आदर्श पूर्ण हो, ताकि समाज की प्रत्येक इकाई का विकास संभव होता रहे। वर्तमान समय में नई औद्योगिक नीति, शहरीकरण व अन्य प्रक्रियाओं के विकसित परिणाम स्वरूप घर और बाहर के समाज में काफी असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। वर्तमान भौतिकवादी एवं सामाजिक परिवर्तमन में भी पुरुष व महिलाओं के अधिकार में असंतुलन की स्थिति पैदा कर दी है। शासकीय एवं अशासकीय संस्थानों में सेवारत, विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं के अधिकार में गुणात्मक परिवर्तन देखे जा रहे हैं। इस दिशा में की जाने वाली अध्ययन में यह पाया गया है कि कार्यकारी महिलाएँ, अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हुई है। पर यह भी देखा जा रहा है कि समाज में इन कामकाजी महिलाओं को जो सम्मान मिलना चाहिए, उसमें आज भी काफी चुनौती उत्पन्न हो रही है। इन जागरूक महिलाओं को आज बार-बार अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य तथा नीति निर्देशक सिद्धांतों में लैंगिक समानता के सिद्धांत का उल्लेख तो किया गया है, पर राज्यों को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव का निर्देश भी देता है।

शोध उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं के राजनीतिक अधि कार के निम्नांकित उद्देश्य है :-

1. पटना जिला के संदर्भ में महिलाओं के सशक्तिकरण की स्थिति का पता चलाना।
2. अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं के जीवन की स्थितियों तथा समस्याओं के बारे में पता लगाना।

3. अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं के राजनीतिक जीवन पर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ :

परिकल्पनाओं को सामाजिक अनुसंधान की व्यवस्थित प्रक्रिया में प्रथम स्थान प्राप्त है।

अनुसंधान कार्य प्रारंभ करने के पूर्व अनुसंधान के कारणों, समस्याओं के समाधान एवं परिणाम के बारे में हम जो भी एक निश्चित अवधारणा बना लेते हैं, उसी परिकल्पना के अधीन :-

1. महिलाओं के राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने के उपरांत महिलाओं के सामाजिक संरचनाए व सामज में एक बदलाव को अनुभव किया जा रहा है।
2. महिलाओं के राजनीतिक के क्षेत्र में आने के कारण ही समाज में एकरूपता, आपसी भाईचारा का जहाँ एक ओर विकास हो रहा है, वही आपसी भेदवभाव व अस्पृश्यता का समापन भी देखा जा रहा है।

तालिका : 1

महिलाओं का राजनीति में प्रवेश के कारण से समाज में होने वाले परिवर्तन

क्र.सं.	परिवर्तन की इकाई	संख्या	प्रतिशत
1	सामाजिक संरचना में होनवाले परिवर्तन	10	20
2	सामाजिक संगठन में होनवाले परिवर्तन	05	10
3	भौतिक स्थिति में परिवर्तन	10	20
4	संबंधों में होने वाले परिवर्तन	05	10
5	परिवार में होने वाली परिवर्तन	10	20
6	सामाजिक चेतना में होने वाली परिवर्तन	10	20
	योग्य	**50**	**100**

तथ्य संकल्न के लिए उद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति का चयन करके कुल में से 50 उत्तरदातों इकाइयों का चयन किया गया। उनके द्वारा प्राप्त उत्तरों को सांख्यिकी द्वारा विश्लेषण भी किया गया। विश्लेषण के क्रम को तालिका संख्या-01 में देखा जा सकता है। महिलाओं का राजनीति में प्रवेश करने के कारण ऐसे क्षेत्र भी देखे गये थे जिनमें अपेक्षित परिवर्तन हुए।

तालिका संख्या- 2

महिलाओं का राजनीति में प्रवेश के कारण प्रभावित क्षेत्र

क्र.सं.	प्रभावित होने वाला क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत
1.	बैंकिंग का क्षेत्र	10	20
2.	मनोरंजन का क्षेत्र	15	30
3.	व्यापार का क्षेत्र	05	10
4.	शिक्षा का क्षेत्र	05	10
5.	चिकित्सा का क्षेत्र	10	20
6.	खेल का क्षेत्र	05	10
	योग	**50**	**100**

तालिका संख्या-02 ने बड़े ही स्पष्ट तरीके से महिलाओं की भागीदारी को उपयोगिता पूर्ण तरीके से चित्रित करता है। आगे जब हम महिलाओं की सहभागिता अधिकार को समाज के अंदर गुणात्मक परिणाम को देखने की कोशिश करेंगे तो पाएंगे की तालिका-03 इसे स्पष्ट तरीके से अपने चित्रण को प्रस्तुत करता है।

तालिका-3

समाज में होने वाले परिवर्तन

क्र.सं.	परिणाम	संख्या	प्रतिशत
1	विवाह की स्थिति में	10	20
2	प्राथमिक संगठन में	10	20
3	द्वितीयक संगठन में	10	20
4	सरकारी पद प्राप्ति मे	10	20
5	निर्माण क्षेत्र में	05	10
6	वृहद प्रमाण में	10	20
	योग	**50**	**100**

इस प्रकार तालिका-1, तालिका-2, तालिका-3 के अध्ययन से महिलाओं को मिलने वाली अधिकारी ने सामाजिक ढांचे में अमूल परिवर्तन किया है। ऐसे में अब आवश्यक हो जाता है कि इस दिशा में उतरोत्तर विकास हेतु निम्नलिखित सुझाव का पालन किया जाना चाहिए :-

1. महिलाओं के राजनीतिक स्थिति एवं परिस्थिति में सुधार किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं को उनके कानूनी अधिकार के प्रति जागरूक

किया जाना चाहिए।

3. महिलाओं में मानसिक पद्धति में अपेक्षित सुधार लाने के प्रयास करना चाहिए।

महिलाओं की राजनैतिक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण के अनुसार नारियों की शक्तिहीनता का मुख्य कारण राजनैतिक परिदृश्य पर उनका अदृश्य होना या अत्यन्त सीमित प्रतिनिधित्व होना है । उनमें राजनैतिक चेतना की कमी होती है, उनका राजनैतिक संगठन नहीं होता तथा मुख्य धारा के राजनैतिक दलों में उनका खास महत्व नहीं होता है । इस दृष्टि के अनुसार-

(क) पंचायती राज संस्थाओं/स्थानीय निकायों से लेकर प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय विधायिका में महिलाओं के लिए निर्वाचन क्षेत्र/सीटें आरक्षित हों, जिससे स्त्री-पुरुष के बीच विषम धरातल समान हो जाये ।

(ख) सभी राजनैतिक दलों के संगठनात्मक ढाँचे में सभी स्तरों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व हो, जिससे टिकट बँटवारे में महिलाओं के हितों का ध्यान रखा जाये, इसके घोषणा-पत्र में महिलाओं के हितों की रक्षा शामिल हो सके तथा सरकार के कार्यों की समीक्षा महिला प्रतिनिधियों द्वारा की जा सके ।

(ग) महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हो । आज भी ईरान जैसे देशों में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त नहीं होने से उनके हितों की अनदेखी हो रही है ।

(घ) महिलाओं का राजनैतिक प्रशिक्षण विभिन्न कार्यशालाओं, सेमिनारों, गोष्ठियों आदि में नियमित रूप से होना चाहिए, अर्थात् विभिन्न राजनैतिक मुद्दों पर समय-समय पर वाद-विवाद हो, जिनमें आम महिलाओं, महिला अधि कारियों आदि को एक मंच पर लाया जाये, जिससे वे एक दूसरे के अनुभवों का लाभ उठा सकें ।

भारतीय महिलाओं की राजनैतिक स्थिति निम्नलिखित आयामों से जानी जा सकती हैμ

1. महिलाओं की चुनाव में भागीदारी
2. महिलाओं का पंचायती राज संस्थाओं में प्रतिनिधित्व
3. महिलाओं का राज्य की विधायिकाओं में प्रतिनिधित्व
4. महिलाओं का संसद में प्रतिनिधित्व
5. राजनीतिक दलों में प्रतिनिधित्व
6. महिलाओं के लिए आरक्षण ।

महिलाओं की चुनाव में भागीदारी के अंतर्गत दो बातों की समीक्षा की जा सकती है । एक तो यह कि मतदाता के रूप में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या कम है। दूसरे, पुरुष मतदाताओं की तुलना में नारी मतदाताओं की चुनाव में वास्तविक भागीदारी नगन्य है।

निष्कर्ष :

महिलाएँ, हमारे समाज का अनिवार्य अंग है। ऐसे में इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीतिक क्षेत्र में उनकी भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। यह आवश्यक हो जाता है कि महिलाओं को सुदृढ़ करने के लिए उनको शिक्षित करते हुए, उनके अपने अधिकार के प्रति जागरूक करते रहना भी न्याय संगत होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. शरदचन्द्र चक्रवर्ती, विवेकानंद जी के संग में प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।
2. आर.सी. मजुमदार, द हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल, प्रकाशित Vol-X 2nd Edition 1981, P-31
3. ओम प्रकाश, हिंदू विवाह, चतुर्थ संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 182-2001
4. स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद साहित्य।
5. वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ भारत-2005, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.सं.-53